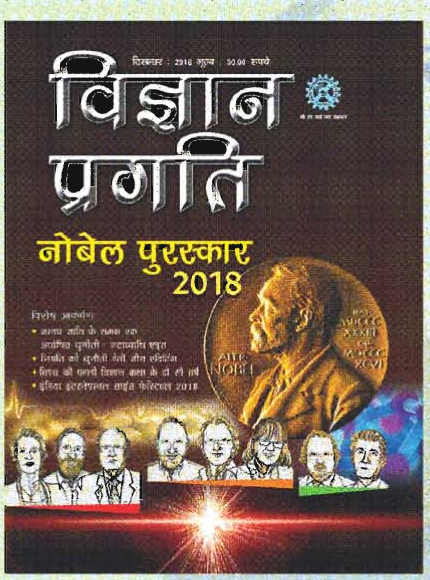

ज्ञानवर्द्धक पत्रिका

विज्ञान प्रगति का दिसम्बर 2018 अंक ज्ञानवर्द्धक लगा। नोबेल पुरस्कार 2018 के विजेताओं के बारे में पढ़कर महत्वपूर्ण जानकारी मिली। महाव्याधि एड्स मानव जाति के लिये सबसे बड़ा खतरा है। एड्स से बचाव के लिये हमेशा जागरूक और सावधान रहना चाहिये। बढ़ता वज्रपात सारी दुनिया के लिये चिंतनीय समस्या है। वैज्ञानिकों को इस समस्या के निदान के लिये शोध कार्य करना चाहिए। औद्योगिक विकास के साथ इनसे निकलने वाली गैसें और सागरों में किये जाने वाले मिसाइल परीक्षणों और परमाणु संयंत्रों से होने वाला रेडिएशन और वायुमंडल में ज्वलनशील गैसों की अधिकता बादलों में टकराहटों का मुख्य कारण है। 'पर्यावरण प्रबन्धन में बायोचार की भूमिका' लेख अच्छा लगा। बायोचार से मृदा संरक्षण और फसल उत्पादन में बढ़ोतरी होगी। शानदार अंक सम्पादन के लिये विज्ञान प्रगति की टीम को हार्दिक धन्यवाद।

श्री कुलदीप मोहन त्रिवेदी, प्रवक्ता
सरजू देवी माता प्रसाद इंटर कालेज बैगाव
पोस्ट-बैगाव, जिला-उन्नाव 209 825 (उ.प्र.)

पसंदीदा पत्रिका

विज्ञान प्रगति का दिसंबर अंक वर्तमान में ज्वलंत मुद्दों पर आधारित अंक रहा। जिसके अंतर्गत विशेष आलेख में अनिल प्रताप सिंह द्वारा लिखी गई 'मानव जाति के समक्ष एक अघोषित चुनौतीः महाव्याधि एड्स' जो चिकित्सा क्षेत्र से जुड़े व ग्रामीण इलाकों खासकर मजदूर वर्ग में जो भ्रांतियां फैली हैं, उस पर आधारित यह आलेख सकारात्मक दृष्टिकोण से है। लोगों को एचआईवी जैसी खतरनाक जानलेवा बीमारी के बारे में जानना इसकी रोकथाम तथा एड्स के प्रति जागरूकता ही इसका समाधान है साथ ही आमुख कथा के अंतर्गत नोबेल पुरस्कार 2018 को लेकर भौतिकी, रसायन और चिकित्सा विज्ञान को लेकर 2018 में मिले पुरस्कार प्रतियोगिता के दृष्टिकोण से बहुत ही महत्वपूर्ण हैं, और अंत में लघु लेख 'मृदा स्वास्थ्य कैसे सुधारें' ज्ञानवर्धक लगा। इसमें किसानों को मृदा के बारे में जांच व सुझाव को बहुत ही रचनात्मक तरीके से दर्शाया गया। वास्तव में विज्ञान प्रगति विज्ञान संचार के लिए एक लोकप्रिय पत्रिका है।

श्री नितेश कुमार सिन्हा
संतोष शर्मा अपार्टमेंट
चंदन बर्फ फैक्ट्री के सामने वाली गली
जनपुल चौक रोड
मोतिहारी 845 401 (बिहार)

सर्वश्रेष्ठ पत्रिका

मैं ल्यूसेंट इंटरनेशनल स्कूल देहरादून के वर्ग 9 का ही छात्र हूँ। मेरे घर में विज्ञान प्रगति मेरे दादाजी स्व. डॉ. योगेंद्र प्रसाद पढ़ा करते थे, उन्होंने ही हमें इस पत्रिका को पढ़ने की सलाह दी थी। मेरे कुछ पसंदीदा लेख इस प्रकार हैं, फरवरी 1978 का जुगन के प्रकाश का रहस्य, हालांकि यह लेख मेरे जन्म से पहले का है, फिर भी मैंने अपने दादाजी के निर्देश पर इन लेखों का अध्ययन किया है, मई 2013 के भारत का नाम पौधों के नाम, दिसम्बर 2015 पर्यावरण है जो हमें देश दुनिया के सभी विज्ञान समाचारों को हम तक पहुंचाता है, और हमें इससे जोड़ता है। मैं पूर्ण अनुभव के साथ कहता हूँ कि विज्ञान प्रगति सर्वश्रेष्ठ पत्रिका है। मेरे घर में आज 45-50 वर्षों से विज्ञान प्रगति आ रही है। आप लोगों से आग्रह है कि जो कोई भी इसे पढ़ रहा है वह इसके बारे में दूसरों को भी बताए और विज्ञान प्रगति को पढ़ने की सलाह दे, क्योंकि पढ़ेगा भारत तभी तो आगे बढ़ेगा भारत।

श्री अभिनव गोईत सुपुत्र श्री अरविंद गोईत
हथियाही, खजौली, मधुबनी 847 228 (बिहार)

उपयोगी पत्रिका

मैं एक रेलवे कर्मचारी हूँ। मैं विज्ञान प्रगति का 8वीं कक्षा से अध्ययन करता आ रहा हूँ। ये विद्यार्थियों के साथ-साथ समाज के हर बुद्धिजीवी वर्ग के लिए उपयोगी है जो अपने ज्ञान को बढ़ाना चाहता है। मैंने दिसम्बर माह की नोबेल पुरस्कार 2018 आमुख कथा का काफी बारीकी से अध्ययन किया इसने मेरे लिए गागर में सागर जैसा काम किया। मैं वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद् का शुक्रगुजार हूँ जो इस ज्ञानवर्धक मासिक पत्रिका का हर माह प्रकाशित करते हैं।

श्री विशेषर राम, सुपुत्र श्री प्रसाद राम
रेलवे आवास सं. 747/सी, नई रेलवे कालोनी
साबरमती, अहमदाबाद 380 019 (गुजरात)
[मो. : 09998465014;
ई-मेल : vkbharti1215@gmail.com]

प्रेरणादायक पत्रिका

विज्ञान प्रगति के नवम्बर 2018 के अंक में प्रकाशित लेख 'बच्चों में बढ़ता अपराध' पढ़ा। जर्नल ऑफ एन्वायरॉन्मेंटल न्यूट्रिशनल मेडिसिन में प्रकाशित एक लेख में बताया गया है कि जंक-फूड पोषक तत्वों की कमी वाला होता है और इसे खाने पर बच्चे मारपीट करने लगते हैं एवं उनका व्यवहार हिंसक हो जाता है। अमेरिका में 13 से 14 वर्ष तक के बाल कैदियों के आहार में लोहा, मैग्नीशियम जस्ता तथा विटामिन बी जैसे 12 तत्वों की कमी' वाला आहार देने पर उक्त व्यवहार देखा गया। उपरोक्त सारे तत्व जब गोलियों के रूप में बाल कैदियों को दिये गये तो 80% बच्चों के हिंसक व्यवहार में सुधार पाया गया। डार्ट माउंट कालेज के प्रो. रोजर मास्टर्स ने अमेरिका के कई शहरों में पर्यावरण प्रदूषण एवं अपराध (केवल बच्चों ही नहीं, सभी के द्वारा) में सम्बन्ध बताया। जहां पर्यावरण, (वायु, मिट्टी एवं जल) में सीसा एवं मैगनीज की अधिकता पायी गई थी वहां अपराध राष्ट्रीय स्तर से 5 से 10 गुना अधिक थे। खाद्यान्न व पेय पदार्थों के साथ आए कीटनाशी व प्लास्टिक के अवशेष भी बढ़ते अपराधिक व्यवहार के सम्भावित कारण बताये गये हैं। नशे की आदत, माता-पिता की व्यस्तता एवं टी.वी. पर हिंसक कार्यक्रमों को देखना भी अपराधी आदत बढ़ा रहे हैं।

डॉ. ओ.पी. जोशी (पूर्व प्राचार्य)
गुजराती साइंस कॉलेज, नसीया रोड
इन्दौर 452 001 (म.प्र.)